शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जनसंचार और ग्रामीण जीवन

सुश्री वन्दना रानी जोशी (शोधार्थी)
डॉ.भीमराव अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय
महू, इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के अनुसार 'गांव भारतीय समाज का आंईना है।'गांव का तात्पर्य किसी विशेष स्थानीय क्षेत्र से नहीं होता, बल्कि गांव तो जीवन की एक विधि है। जिस जगह पर भी लोग दृढ़ सामुदायिक भावना से बंधे रहकर परम्परागत ढंग से व्यवहार करते हैं, उसी स्थान को गांव कहा जाता है। भारतवर्ष प्रधानतः गांवों का देश है। इसलिए गांवों के विकास के बिना देश का विकास किया जा सकता है ऐसा सोचा भी नहीं जा सकता। वर्तमान समय में भारतीय गांवों का जो स्वरूप है वह आज से कुछ वर्षो पहले ऐसा नहीं था। आज गांवों में पक्की सड़कें पीने के लिए साफ पानी, पक्के घर, पंचायत भवन, विद्यालय जैसी समस्त सुविधाओं का श्रेय जनसंचार माध्यमों को जाता है , जिन्होंने न सिर्फ गांव को एक नई पहचान दिलाई है बल्कि गांवों के लोगों को भी समाज की मुख्यधारा में ला खड़ा किया है। ग्रामीण संरचना को जनसंचार माध्यमों ने प्रभावित किया है। वर्तमान में गांवों केा सूचना तकनीक से जोड़ा जा रहा है। जनसंचार के नये साधनों से ग्रामीणों को अपने विकास कार्यक्रम को जानने का अवसर मिला है। स्कूली शिक्षा में कम्प्यूटर विषय जुड़ने से ग्रामीण बच्चे भी सूचना तकनीक से परिचित हुएहैं। ग्रामीण किसान अपनी उपज के भाव इंटरनेट पर देख सकता है व उन्हें बेचने या न बेचने का निर्णय कर सकता है। दूसरी ओर ग्रामीण जीवन में आधुनिकता का समावेश भी जनसंचार माध्यमों की देन है। राजस्थान का गांव तिलोनिया अनपढ़ इंजीनियों का गांव कहलाता है, जहां अनपढ़ व कम शिक्षित महिलाएं न सिर्फ कम्पयूटर प्रशिक्षण देती है अपितु सोलर कुकर , पेयजल व सूचना का अधिकार आदि पर भी काम कर रही हैं। सूचना और जनसंचार माध्यम आज हमारे जीवन के अभिन्न अंग बन गये हैं। 'वसुधैव कटुम्बकम' की अवधारणा आज सत्य सिद्ध हो रही है।

प्रस्तावना

आधुनिकता की ताजी चली हवाओं में रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर, केबल टीवी , होम रेडियो , मोबाइल संस्कृति , उपग्रह सेवओं आदि ने जनसंचार का ऐसा सुनहरा जाल बुना है कि पूरी दुनिया घर, आँगन तथा ड्रांइग रूम तक सिमटकर रह गई है। आज जिज्ञासारूपी घर की समस्त खिड़कियां अन्तरिक्षरूपी स्रोत की तरफ खुली है जिससे ज्ञान, विज्ञान, शिक्षा और मनोरंजन के क्षेत्र में नए कीर्तिमानों का जन्म हुआ है और परोक्ष रूप से व्यक्ति के विचार एवं विवेक प्रभावित हुए हैं, जिन्होंने सामाजिक परिवर्तनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मानव जीवन में संचार व संवाद जीवन रूपी दो रत्न हैं। इसके बिना हमारे जीवन का कोई सार नही है। मानव विकास ही संचार पर टिका हुआ है। अन्य जीवों की तुलना में संचार का महत्व हमारे लिए अलग है। संचार के साधन पहले भी थे और आज भी हैं लेकिन आधुनिक जनसंचार के साधनों ने तो मानो हमारे जीवन की कायापलट ही कर दी है। पहले संचार के साधन दुर्लभ थे और कुछ रईस लोगों द्वारा ही इस्तेमाल किए जाते थे , गरीबों के लिए तो एक स्वप्न ही था। लेकिन आज शहरों से लेकर गांवों तक एक स मान रूप से इसका उपयोग होने लगा। संचार क्रांति ने ग्रामीण समाज की दिशा व

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

दशा ही बदल कर रख दी है। आधुनिक युग में जनसंचार काफी प्रचलित शब्द है इसका निर्माण दो शब्दों से मिलकर हुआ है जो जन और संचार के योग से बना है। जन का अर्थ जनता से होता है, आक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार जन का पूर्ण रूप से व्यक्तिवादिता का अंत है। इस प्रकार समूह संचार का बडा रूप जनसंचार है। इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग उन्नीसवीं सदी के तीसरे दशक के अंतिम दौर में संदेश सम्प्रेषण के लिए किया गया है। ग्रामीण संचार क्रांति के इस क्षेत्र में अनुसंधान के कारण जैसे-जैसे समाचारपत्रों , पत्रिकाओं, रेडियो, टी.वी., इंटरनेट, वेब पोर्टल इत्यादि का प्रयोग बढ़ता गया है , वैसे-वैसे जनसंचार के क्षेत्र का विस्तार भी बढ़ता गया है। ग्रामीण जनसंचार और जनमाध्यमों को एक ही समझा जाता है किन्तु दोनों अलग-अलग शब्द हैं। जनसंचार एक प्रकिया है जबकि जन माध्यम इसका साधन है। जनसंचार माध्यमों के विकास के शुरुआती दौर में जन माध्यम लोगों को आवश्यक सूचना देते थे , किन्तु उसमें मानव की सहभागिता नहीं होती थी। इस समस्या को संचार विशेषज्ञ जल्दी समझ गये और समस्या के समाधन के लिए लगातार अपना प्रयास करते रहे। इन्टरनेट के विकास के बाद ग्रामीण समाज की सूचना के प्रति भागदारी बढ़ी है। ग्रामीण समाज में लोगों को मनचाही सूचनाएं प्राप्त होने लगी है और दूसरों तक तेज गति से सूचनाओं का आदन-प्रदान होने लगा है।

संचार माध्यम और ग्राम

जनसंचार के क्षेत्र में गत कुछ वर्षो में संचार के माध्यमों केा तेजी से विकास हुआ। नए माध्यमों के और भी विस्तार की संभावनाएं है। नवीन माध्यमों के साथ परम्परागत माध्यम भी अपना अस्तित्व बनाए हु ए है। जसंचार के आधुनिक माध्यमों के प्रभाव की सीमाओं को देखकर यह कहना अनुचित होगा कि गांव के विकास में उनकी उपयोगिता शंकास्पद है। संचार माध्यमों की ग्रामीण समाज तक पहुंच देश की महत्वपूर्ण सफलताओं में से एक है। संचार माध्यमों का कार्य भी यही है कि गांवों के प्रत्येक व्यक्ति की आवाज को उठाया जाए और उनकी समस्याओं को प्रमुखता दी जाये। बोरडेनेव के अनुसार, "यदि ग्रामीण विकास की सम्पूर्ण स्थिति की समीक्षा की जाये तो कहा जा सकता है कि ग्रामीण विकास में संचार माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका है।" पूर्व में गांव शहरों की तुलना में अभावों के बीच जीवन यापन क रते थे , परंतु आज इस स्थिति में बड़ा बदलाव आ चुका है। सफाई , शिक्षा, स्वास्थ्य, रोशनी, पानी गांवों की मूल भूत समस्याएं हुआ करती थीं जिनसे ग्रामीणों को काफी हद तक निजात मिल चुकी है। किसान के लिए सबसे ऊपर है उसका प्यारा खेत दिन रात अच्छी फसल की चिंता में वह डूबा रहता था। अच्छे बीज कैसे प्राप्त हों ? अच्छी खाद कहां से प्राप्त की जाए ? और अच्छी देखभाल कैसे की जाए जैसे सवालों से किसान हमेशा चिंतित रहता था परंतु संचार के माध्यम जैसे रेडियो , टी.वी., समाचारपत्र इत्यादि ने इन सब माध्यमों को कैसे और कहाँ से जुटाया जाए उसके लिए किसानों का मार्गदर्शन करना प्रारम्भ कर दिया है। संचार माध्यमों ने परम्परागत किसानों को आधुनिक किसान बना दिया है। ग्रामीण पृष्ठभूमि में किसानों के लिए जनसंचार एक वरदान बनकर सामने आया है जिसने भारतीय गांवों को उनकी पुरानी, जटिल और पिछड़ी हुए छवि से बाहर निकालकर आधुनिक रूप प्रदान किया है। जिसका फायदा किसानों को प्रत्यक्ष रूप से हो रहा है। संचार तकनीक के उपयोग के द्वारा गांवों में

प्रबंधन एवं प्रशासन की कार्यकुशलता में प्रभावी वृद्धि सम्भव है। सामुदायिक रेडियो और इंटरनेट ने गांव की कार्य प्रणाली को सुविधाजनक और सरल बनाने का कार्य किया है।

नवीन संचार माध्यम और ग्रामीण विकास- हमारे देश में साक्षरता का स्तर अत्यंत कम है। इस बात को ध्यान में रखते हुए संचार के माध्यम का चुनाव करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य है। संचार माध्यम का चुनाव इस बात को भी ध्यान में रखकर किया जाता है कि साक्षर व निरक्षर ग्रामीणों तक समान रूप से जानकारी पहुंच सके। आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी हस्तातंरण के रूप में संचार के नवीन माध्यमों में से एक टेलीविजन और रेडियो महत्वपूर्ण है। इलेक्ट्रानिक मीडिया जैसे रेडियो, टीवी के विविध चैनल्स और दूरदर्शन अब गांवों की ओर मुड़े हैं। ग्रामीण आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रदर्शित नियमित कार्यक्रमों के मुख्य दो उद्देश्य ग्रामीण कृषकों को आधुनिक तकनीक ओर कृषि जगत से सम्बधित जानकारी देना है जैसे-उन्नत कृषि पद्धति , उर्वरक, बीज नये उपकरण, कुटीर उद्योग-धंधों, ग्रामिण विकास, कृषि समाचार, मौसम सम्बन्धी जानकारी। दूसरा उद्देश्य है- शिक्षा , स्वास्थ्य, सफाई, परिवार कल्याण , पर्यावरण आदि आते हैं। ग्रामीण कार्यक्रमों के विस्तार के लिए 1975 ई. में उपग्रह से संचालित साईट परियोजना शुरू हुई जिसके अंतर्गत 6 राज्यों के 2400 गांव लाभान्वित हुए। कृषि दर्शन चैपाल, मेरा पिण्ड जैसे कार्यक्रम कृषि जगत से ही सम्बद्ध है। स्वास्थ्य , शिक्षा, गरीबी उन्मूलन , पंचायती राज , सहकारिता, श्रमिक कल्याण , युवा जगत, उद्योग विकास , आवास, विधि -विधान आदि समायिक विषयों पर दूरदर्शन कार्यक्रम प्रसारित करता रहता है। संचार माध्यमों के उपयोग द्वारा सरकार एवं ग्रामीण जनता के मध्य संवाद स्थापित हुआ है एवं नई संचार तकनीक जैसे ऑडियो एवं वीडियो टेप रिकार्डिंग के द्वारा संदेशों एवं सूचनाओं के आदान-प्रदान से सभी वर्गो के मध्य आपसी समझ में वृद्धि हुई है। आज मल्टीमीडिया , सीडी रोम तथा इंटरनेट , मोबाईल फोन जैसे उच्च तकनीकी सांधनों के द्वारा सूचनाएं तीव्र गति से संचारित की जा सकती हैं। आज भौगोलिक सीमाओं का कोई अस्तित्व नही रह गया है। शहर और गांवों का भेद समाप्त हो गया है। इंटरनेट के द्वारा सूचनाओं का आदान-प्रदान कम लागत में व्यापक क्षेत्र में सम्भव है।

जनसंचार माध्यम और ग्रामीण परिवार- जनसंचार माध्यमों ने समाज को सूचना समाज में परिवर्तित कर परिवार की संरचना में परिवर्तन किया। परिवार के परंपरागत स्वरूप के अनुसार क्रमशः विस्तृत परिवार , संयुक्त परिवार , एकाकी परिवार, एकल अभिभावक परिवार में परिवर्तित हो गया है। परिवार के इन बदलते स्वरूपों से प्रतीत होता है कि वर्तमान में परिवार का स्वरूप बदल गया है समाज में खान-पान , रहन-सहन, वेशभूषा, विचार, प्रतिमान इत्यादि ने परिर्वतन वैश्वीकरण , आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण व नवीन प्रौद्योगिकी के परिणाम स्वरूप हो रहा है तथा वर्तमान का समाज सूचना समाज है। जिसमें सबंध अर्थहीन हो गये हैं। आज समाज में सबंधों का कोई महत्व नही रहा है। इन विभिन्न आधुनिक परिवर्तनों ने समाज में सहजीवन परिवार (लिव इन रिलेशनशीप , सरोगट मदर, परखनली शिशु, कार्यशील महिला, लैब की चाइल्ड व अल्फा वुमन जैसी नई अवधाराणाओं को विकसित किया है। जब हम सूचना क्रांति के प्रभाव की बात करते हैं तो हम पाते हैं कि कोई भी मानवीय पहलू इससे अछूता नहीं बचा है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पारिवारिक संरचना पर इसका जहां अच्छा प्रभाव यह पड़ा कि मोबाइल के माध्यम से परिवार का हर एक सदस्य एक -दूसरे से हर समय जुड़ा को एक -दूसरे की पल-पल की खबर रहती है। किन्तु इसका नकारात्मक पहलू यह भी है कि आज परिवार के सदस्य अपनी-अपनी पसंद के इलेक्ट्रानिक उपक्रम से अपना मनोरंजन करने में लगे रहते हैं। कोई टीवी देख रहा है तो कोई मोबाइल पर गाने सुन रहा है तो कोई इंटरनेट पर चैंटिग कर रहा है। ऐसी स्थिति बहुत ही कम देखने को मिलती है जब परिवार के सभी सदस्य एक जगह बैठ कर अपने दुःख- सुःख साझा कर रहे हों जैसे कि पहले हुआ करता था। जातीय संरचना पर संचना क्रांति का अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। आधुनिक संचार की अवधारणा वाले इस युग में जातीय बंधन बहुत शिथिल हो गये हैं। इंटरनेट के चलते आज सूचना के आदान-प्रदान के कारण आपसी विचार-विनिमय के द्वारा विभिन्न जातियों के लोग परस्पर सम्पर्क में आकर आपस में वैवाहिक संबंध स्थापित करने लगे है और रोटी -बेटी की पुरानी परम्पराएं अब गुजरे जमाने की बात बनती जा रही है। आजादी के 60 सालों में ग्रामीण भारत की तस्वीर में आधारभूत परिवर्तन हुए है। ग्रामीण क्षेत्र में तीव्र यातायात, संदेश वाहन सूचना क्रांति के साधनों के विकास में नई चेतना आई है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के भौगालिक दूरियां कम हुई है। जनसंख्या का पलायन शहरों की ओर बढ़ा है। सभी सुख सुविधाएं ग्रामीण क्षेत्रों में भी आसानी से प्राप्त हो रही हैं।

ग्रामीण संचार माध्यम और बाजारवाद की चुनौती- गांव के खेत खलिहान, किसान के लिए चलाई जा रही योजनाएं , ग्रामीण संस्कृति और रहन-सहन ऐसी कई चीजें संचार माध्यमों के जरिए आम जनता तक पहुंच रही है। इन सबके बाजवूद संचार माध्यम ग्रामीण समाज और उससे जुड़ी खबरों को कितना महत्व दे रहे हैं ये किसी से छिपा नहीं है। भूत-प्रेत और अंधविश्वास की खबरे आधुनिक जनसंचार माध्यमों जैसे इलेक्ट्रानिक मीडिया के द्वारा विशेष कार्यक्रमों के जरिए पैकेज बना कर दिखाया जा रहा है। दो -दो वक्त की रोटी और तन ढकने के लिए कपड़ों के मोहताज लोगों की आवाज को जनसंचार माध्यम अनदेखा करने में लगे हैं।

जनसंचार माध्यम बाजारवाद की मोहमाया में फंस कर अपना दायित्व भूलते जा रहे हैं। ऐसे में संचार माध्यमों अर्थात मीडिया में गांवों में कुपोषण से मरने वाले टीवी स्क्रीन में अपनी जगह शायद ही बना पाते हैं, क्योंकि इससे उनकी टीआरपी नहीं बढ़ती और ना रईस एयर कडीशनर में बैठ कर ऐसी ख़बरें देखना पसंद करते हैं। हमारा देश गांवों का देश है और गांव की हालत जाने बगैर हम नही जान सकते कि देश की स्थिति कैसी है। इन सब के के बाद एक और गंभीर पहलू है कि आज अखबारों के इतने संस्करण हो गये है कि वहां कि खबर जिले तक ही सिमट जाती है। कभी -कभार राजधानी के संस्करणों के किसी स्थान पर मुश्किल से गांव की खबरें अपनी जगह बना पाते हैं। हालांकि गांव की खबरों को राजधानी से निकलने वाले संस्करणों में स्थान मिल रहा है लेकिन बहुत कम। जवाब स्पष्ट है कि संचार माध्यम बाजारवाद की चपेट में पूरी तरह से आ चुके हैं वह उसी खबर को अपने संस्करण में शामिल करते हैं जिसे ज्यादा लोग देखना या पढ़ना चाहेंगे। ऐसे में राजधानी स्तर पर जहां सरकार के मंत्री और जनप्रतिनिधि तथा अधिकारी बैठते हैं उन तक खबरों के माध्यम से गांव की तस्वीर

नहीं पहुंच पाती। इसके लिए जनसंचार माध्यम के सामने यह एक बड़ी चुनौती है कि वह गांवों का असली रूप नीति निर्धारकों तक पहुंचा सके। जनसंचार माध्यम और ग्रामीण विकास- ग्रामीण विकास में जनसंचार माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका है। संचार के नये उपागमों को अपनाकर ग्रामीण विकास के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन हुए है। सूचनावाहक , ग्रामीण वातावरण में जिन संचार साधनों का प्रयोग करता है वह प्रायः दो प्रकार के होते हैं-

1.एक ही गांव में प्रयुक्त होने वाले संचार साधन
2.एक गांव से दूसरे गांव में/शहर आदी में प्रयुक्त होने वाले संचार साधन।

संचार माध्यमों के उपयोग द्वारा सरकार व ग्रामीण जनता के मध्य स्थापित हुए है एवं नई संचार तकनीक जैसे ऑडियो एवं वीडियो टेप रिकार्डिंग के द्वारा संदेशों एवं सूचनाओं के आदान-प्रदान से सभी वर्गों के मध्य आपसी समझ में वृद्धि हुई है। आज के युग को जनसंचार का युग कहा जा सकता है क्योंकि इक्कीसवीं शताब्दी का प्रारम्भ सूचना तकनीक की अभूतपूर्व क्रान्ति के साथ हुआ है। माइक्रो इलेक्ट्रानिक्स तथा कम्प्यूटर तकनीक ने दूरसंचार के साथ मिलकर जिस तकनीक को विकसित किया उसे ही सूचना तकनीक कहा जाता है। गिलमैन के अनुसार "माइक्रो इलेक्ट्रानिक, कम्प्यूटर एवं दूरसंचार जैसे संचार माध्यमों के द्वारा सूचनाओं का अधिग्रहण , प्रक्रिया एवं प्रसारित करने की तकनीक ही सूचना तकनीक है।"

आज मल्टीमीडिया , सी.डी.रोम तथा इंटरनेट , मोबाईल फोन जैसे उच्च तकनीकी साधनों के द्वारा सूचनाएं तीव्र गति से संचारित की जा सकती है। आज भौगोलिक सीमाओं का कोई अस्तित्व नहीं रह गया। शहर और गाँवों का भेद समाप्त हो गया है। इंटरनेट के द्वारा सूचनाओं का आदान-प्रदान कम लागत में व्यापक क्षेत्र में सम्भव है। इंटरनेट की कुछ सुविधाये जैसे इलेक्ट्रानिक मेल या ईमेल , ई-प्रशासन, ई-कामर्स, ई-स्कूल इत्यादि। इस प्रकार नवीन इलेक्ट्रानिक मीडिया के विभिन्न कार्य है- 1. योजना का निर्माण, 2.कर्यक्रम का निर्माण, 3. प्रसारण

निष्कर्ष

जनसंचार तकनीक के उपयोग के द्वारा गांवों में प्रबंधन एवं प्रशासन की कार्यकुशलता में प्रभावी वृद्धि सम्भव है। सामुदायिक रेडियो और इंटरनेट गांव की कार्य प्रणाली को सुविधाजनक और सरल बनाने कार्य किया है। जनसंचार ने गांव के विकास को नए आयाम प्रदान किए है। जनसंचार का उद्देश्य ग्रामीण जीवन के विभिन्न पहलुओं को इंगित कर ग्राम के विकास में सहायता प्रदान करना है। परिवार एवं जनकल्याण , साक्षरता, कृषि की उन्नत विधियां, महिला एवं बाल विकास की स्थितियों का आकलन , नवीन योजनाओं की जानकारी व गांवों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ना इनमें शामिल है। महत्वपूर्ण यह कि भारत की आत्मा गांवों में बस्ती है और पूरे देश को खाद्यान्न की आपूर्ति गांवों से होती है। अतः जनसंचार न केवल गांवों के विकास में मदद करता है बल्कि गांव व शहरों के पारस्परिक सम्बंध पर सेतु का कार्य करता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. *जनसंचार कल आज और कल , प्रो. चंद्रकांत सरदाना, प्रो. कृ.शि. मेहता*
2. *संचार एवं सामाजिक परिवर्तन, डॉ. राकेश शर्मा*
3. *सूचना क्रांति और भारतीय समाज, शोभा सुद्रास*
4. *सूचना प्रौद्योगिकी और जनमाध्यम, डॉ..अनिल के. राय*